* S B - 0 1 1 2 / 4 6 0 0 *

SB-0112

Second Year B. A. Examination

March / April – 2011

Hindi : Paper - II

(हिन्दी नाट्य साहित्य)

Time : Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : (१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **S. Y. B. A.**

Name of the Subject :

☛ **Hindi - Paper - 2**

☛ Subject Code No. : **0 1 1 2** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **Nil**

Seat No. :

Student's Signature

(२) सभी प्रश्नो के अंक समान है।

१ ''करफ्यू' दाम्पत्य–जीवन की कटु सच्चाई को उजागर करनेवाला नाटक है'' – समीक्षा कीजिए १४

अथवा

१ 'करफ्यू' नाटक के आधार पर आधुनिक नारी के रूप में मनीषा का चरित्रांकन कीजिए। १४

२ ''सीमा–रेखा' एकांकी में जनता, जन–प्रतिनिधि और प्रशासन की सीमारेखा को प्रदर्शित किया गया है'' – समीक्षा कीजिए। १४

अथवा

२ 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के आधार पर उमा की चारित्रिक विशेषताओं की चर्चा कीजिए।' १४

३ 'करफ्यू' नाटक के आधार पर कविता की चरित्रगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। १४

अथवा

३ एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'आखेट' एकांकी की समीक्षा कीजिए। १४

४ टिप्पणीयाँ लिखिए : १४

(अ) 'करफ्यू' नाटक में संवाद योजना।

अथवा

(अ) 'करफ्यू' नाटक में गौतम का चरित्र।

(ब) 'अधिकार का रक्षक' शीर्षक की सार्थकता।

अथवा

(ब) चारुमित्रा का चरित्र।

५ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : १४

(क) ''कैसी बात करते हैं ! आप पर अविश्वास तो मैं स्वप्न में भी नहीं कर सकती अपने पर शायद उतना न हो, आप पर है।''

अथवा

(क) ''पुरुष जिसके बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं, पुरुष जिसकी चाह हर स्त्री अपना आत्मा में पालती है, पुरुष जिसकी गोद ही स्त्री की मुक्ति है।''

(ख) ''जब किसी व्यक्ति में शक्ति की क्षमता होती है, तो बुरे मार्ग से अच्छे पर और अच्छे मार्ग से बुरे मार्ग पर जाने में विलंब नहीं लगता।''

अथवा

(ख) ''जी हाँ, जाइये। जरुर चले जाइये। लेकिन घर जाकर यह पता लगाइयेगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं... यानी बैकबोन, बैकबोन...''

(ग) ''नाटक तो जीवन का प्रतिबिम्ब ही है। पहले जीवन, फिर नाटक। बिना जीवन बदले, नाटक बदलने की बात असंभव है, मूर्खतापूर्ण है...।''

अथवा

(ग) ''हाँ मैं पागल हो गया हूँ... मेरे कागज दे दो, मैं 'आवाज' नहीं बचूँगा...''